एफिल टावर वाया स्विस

(विदेश यात्रा)

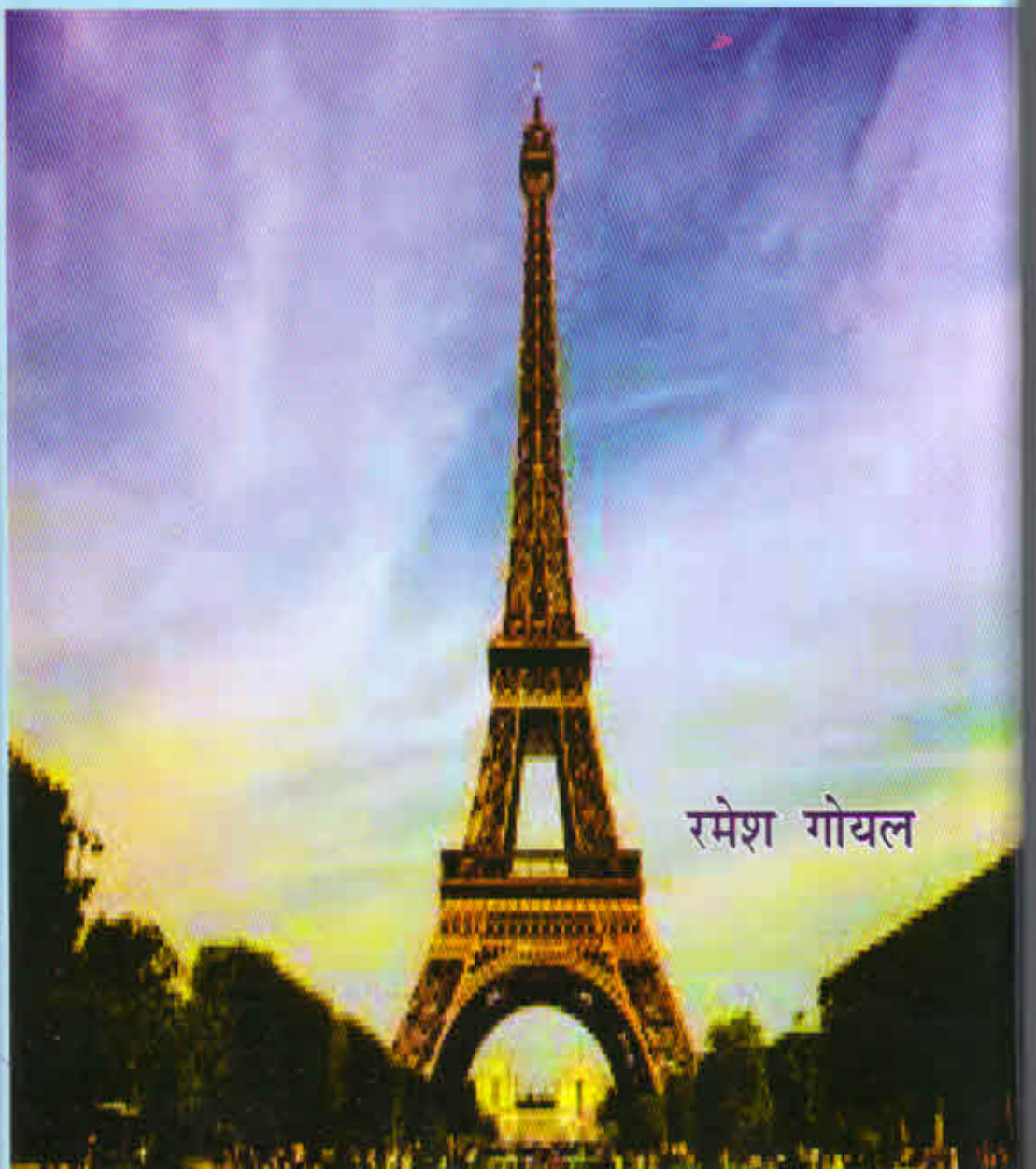

रमेश गोयल

एफिल टावर वाया स्विस

(विदेश यात्रा)

रमेश गोयल

सुकीर्ति प्रकाशन
करनाल रोड,
कैथल-136027 (हरियाणा)

अपनी बात

जून 2010 में भगवत् कृपा से स्विटजरलैंड भ्रमण पर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिसमें विशेष बात यह थी कि यह भ्रमण श्रीमद्भागवत कथा के बहाने था और लगभग 300 लोगों के एक समूह में था। यूं कहिए कि आम के आम और गुठलियों के दाम यानी विदेश भ्रमण व कथा श्रवण। आदरणीय श्री मृदुल कृष्ण जी के मुखारविन्द से विदेश में भागवत कथा का रसास्वादन तथा दीवान होमडेज, दिल्ली की एक विश्व भ्रमण एजेन्सी, के माध्यम से भ्रमण ने इस यात्रा को एक सुखद अनुभूति, प्रसन्नता व उल्लास से भर दिया। मैं भ्रमण पर जब कभी भी कहीं गया हूं तो नोटिंग करता रहा हूं परन्तु उसे पूर्णरूपेण कलमबंद पहली बार ही कर पाया हूं। मेरे लेख व अन्य रचनाएं यद्यपि राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं परन्तु किसी पुस्तक रूप में यह प्रथम प्रयास ही है इसलिए त्रुटियां रहना स्वाभाविक है जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं। मैंने मृदुल जी के कथा प्रसंगों तथा दर्शनीय स्थलों के विवरण में अपने विचार भी प्रस्तुत किए हैं और आपको यह कृति पसन्द आए तो कृपया कुछ शब्द समीक्षात्मक रूप में लिखकर अवश्य भेजें, मुझे प्रतीक्षा रहेगी। मैं आभारी हूं अपने प्रेरणा स्रोत श्री पूरन मुद्गल का, जिनका आशीर्वाद व मार्ग दर्शन लेखन के साथ-साथ सामाजिक कार्यों के लिए गत 50 वर्षों से अधिक समय से निरन्तर मिल रहा है। संस्कृत व हिन्दी के प्रख्यात वयोवृद्ध विद्वान श्री श्रीगोपाल शास्त्री जी का भी मैं आभारी हूं जिन्होंने मेरे शब्दों को तराश कर आप तक पहुंचाने योग्य बनाया है। अपने उन सभी साथियों का भी आभारी हूं जो यात्रा में हमारे साथ रहे और आज भी अपना स्नेह समय-समय पर प्रदान करते रहते हैं।

-रमेश गोयल

विदेश भ्रमण

विश्व कल्याण कथा ट्रस्ट दिल्ली के तत्वावधान में स्विटजरलैंड में श्रीमद्भागवत कथा के आयोजन 2 जून से 8 जून 2010 व पैरिस (फ्रांस) भ्रमण 9 व 10 जून की सूचना पर विदेश भ्रमण का निर्णय किया ताकि भागवत कथा श्रवण व विदेश भ्रमण दोनों का लाभ मिल सके। पासपोर्ट पहले ही बने हुए थे और वीजा भी लग गया। एक जून को किसान एक्सप्रेस से धर्मपत्नी श्रीमती कमला गोयल सहित दिल्ली के लिए रवाना हुए और दिल्ली अपने पुत्र मनीष के पास विश्राम के बाद 1-2 जून रात्रि एक बजे हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए तथा 2 जून को प्रातः 4:45 बजे पर टर्कीस एयरवेज द्वारा इंदिरा गान्धी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरी। इस विदेश यात्रा में अनुज तुल्य इन्द्र गोयल व उसकी धर्मपत्नी अंजना गोयल भी साथ थे।

भागवत कथा श्रवण व विदेश भ्रमण के उद्देश्य से इस जहाज में काफी यात्री थे और कुल लगभग 300 यात्री अलग-अलग जहाज से इस आयोजन हेतु स्विटजरलैंड के ज्यूरिच हवाई अड्डे पर पहुंचने थे। प्रातः 8.00 बजे पर जहाज ने उड़ान भरी और देखते ही देखते बादलों के पार हो गया उस समय उसकी गति 553 कि.मी. प्रति घण्टा थी। प्रातः 9.20 पर सभी यात्रियों को भारतीय नाश्ता दिया गया जिसके साथ फलों का रस, चाय, काफी के अतिरिक्त बियर आदि भी उपलब्ध था। चलता हुआ जहाज केवल नीचे के दृश्यों के कारण ही चलता हुआ प्रतीत होता था अन्यथा जहाज के अन्दर ऐसे अनुभव होता था जैसे जहाज एक स्थान पर खड़ा हुआ हवा में तैर रहा है। 10 बजकर 15-20 मिनट पर हवाई जहाज किसी शहर के ऊपर से गुजरा तो नीचे देखने पर सड़कें लाईनों के रूप में तथा मकान छोटी छोटी डिब्बियों के आकार में नजर आ रहे थे। जहाज में सीट नम्बर लगवाते समय मैंने खिड़की के साथ की सीट का नम्बर ध्यान करके लगवाया था जिसके कारण ऊपर से सभी दृश्य देखने का मुझे सुअवसर प्राप्त हो। दूर सामने एक ऊंची पहाड़ सी श्रृंखला नज़र आ रही थी जो कहीं ऊंची और कहीं नीची लग रही थी। जहाज कुछ और ऊँचाई पर हुआ और

ने सबको समझा कर घर वापिस भेज दिया। यद्यपि अंगद ने बहुत जिद की परन्तु उसे भी भगवान ने समझा बुझा कर भेज दिया क्योंकि घर परिवार व समाज का कार्य मनुष्य का दायित्व है और प्रभु चिन्तन करते हुए कर्त्तव्य पालन करना चाहिए।

होटल में प्रातः सब सामान पैक करते हुए घर वापसी के लिए तन व मन से तैयार होकर नीचे गैलरी में आ गए जहां नाश्ता करने के बाद सभी लोग सामान सहित 7.40 पर बाहर आ गए। ड्राईवर को 8 बजे का समय दिया हुआ था और वह ठीक समय पर पहुंच गया। 8.15 पर हम बस द्वारा हवाई अड्डे के लिए चल पड़े। पैरिस में सफाई स्विस के मुकाबले कम थी परन्तु यह एक ऐतिहासिक शहर है जहां घूमने व देखने को बहुत कुछ है। हरियाली बहुत है। हर भवन बड़ा अलग डिजायन में बना है। नियम पालन मजबूती से होता है। भवनों के रंग लगभग एक जैसे क्रीमी रंग हैं। दाईं ओर चलने का नियम है। यहां नियम भंग करने का प्रयास करता कोई भी नज़र नहीं आता जबकि ठीक इसके विपरीत भारत में नियम पालन करता हुआ कोई-कोई नज़र आता है बल्कि जो सही दिशा में नियमानुसार चलता है उसे परेशानी होती है। वर्तमान में बड़े शहरों में तथा राष्ट्रीय राज मार्गों पर ऐसी व्यवस्था की जा रही है कि लोग नियमानुसार ही चलें। वास्तव में "यथा राजा तथा प्रजा" की लोकोक्ति चरितार्थ होती है। हमारे देश के शासक व प्रशासक निजहित व सुविधा के लिए नियमों को ताक पर रख देते हैं और वही दर्पण जनता के सामने होता है। 8.50 पर एयरपोर्ट पहुचकर टर्कीज एयरवेज काऊंटर पर सामान जमा कराया तथा टिकट चैक करा कर बोर्डिंग पास प्राप्त किया और प्रतीक्षालय में बैठ गए। एयरपोर्ट पर ड्यूटी फ्री व्हिस्की व सिगरेट उपलब्ध थी जो मेरे साथी इन्द्र गोयल सहित कुछ सह यात्रियों ने खरीदी। और भी सामान था जिसमें से कुछ हमने भी खरीदा। वहां दो सोफा चेयर थी जो 2 यूरो का सिक्का डालकर चलाई जा सकती थी और सोफे पर बैठे व्यक्ति का 5 मिनट तक अच्छा मसाज स्वतः हो जाता था। मैने भी इसका उपयोग किया। 5 मिनट में कोई विशेष लाभ नहीं मिला फिर भी कमर को कुछ चैन अवश्य मिला। इस समय 10.46 बज रहे थे और हम टर्की एयरवेज के 165 सीटर जहाज में सवार हो गए और 11.10 पर फ्रांस व पैरिस को अलविदा कह कर जहाज बदलों को पार करता हुआ

आकाश में तैरने लगा और नीचे कहीं नीला बादल तो कहीं सफेद बादल रूई के ढेर जैसा नजर आने लगा था।

12.45 पर जहाज समुद्र तल से 11227 फुट की ऊंचाई पर उड़ रहा था। यात्रियों को जहाज में भोजन दिया गया जिसमें चावल, दही, सलाद, एक सब्जी व ब्रेड पीस था, मिठाई नहीं थी। साथ कोल्ड ड्रिंक्स, चाय, काफी की भी सुविधा थी। फ्रांस व इस्तम्बूल के समय में एक घंटे का अन्तर है। इस्तम्बूल पहुंचकर जाते समय की भांति 3 घण्टे इन्तजार करना था। इस बार यात्री बोर नहीं हुए क्योंकि सबका पेट भरा था इसलिए घूम फिर कर समय आसानी से पास हो गया। टर्की की राजधानी इस्तम्बूल समुद्र किनारे बसा शहर है और यहां का हवाई अड्डा भी बहुत बड़ा है जहां से पूरी दुनिया के लिए जहाज जाते हैं। जहाज बदलने और दोनों की उड़ान में समय अन्तराल के कारण प्रतीक्षालय में बड़ी संख्या में यात्री होते हैं और इसी कारण हवाई अड्डे पर बहुत बड़ा मार्केट है जहां छोटी बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की वस्तुएं उपलब्ध हैं।

दिल्ली जाने के लिए जहाज में सवार होने की सूचना के समय हमारा एक सह यात्री वहां नहीं था। उसकी पत्नी को भी अकेला छोड़ना हमें अच्छा नहीं लग रहा था। हम 3-4 लोग अलग अलग दिशा में उसे तलाशने लगे। जहाज ग्रुप की ओर से वार्निंग मिलने पर उस बहिन ने हमें जाने को कहा परन्तु हमें अपने साथी को वहां छोड़ने की बात ठीक नहीं लग रही थी बल्कि बाद में होने वाली परेशानी का भी हमें आभास था। इतनी ही देर में वह साथी दूर से आता दिखाई दिया तो उसे दौड़ने के लिए कहा और इस प्रकार सभी निश्चिंतता से जहाज के अन्दर आ गए। इस थोड़ी सी अवधि में हमारे ग्रुप के सभी लोग काफी परेशान रहे। वहां के समय अनुसार 19.05 पर जहाज चला और 3-4 मिनट में ही आसमान में पहुंच गया। उस समय तापमान 26 डिग्री था। जहाज ऊपर उठने के बाद कहीं जंगल, कहीं आबादी रेंगते से वाहन, समुद्र व जहाज नजर आते रहे। यात्री जहाज की क्षमता से कम थे, रात्रि का समय हो रहा था इसलिए जहां जिसे स्थान मिला, सो गया। जैसे रेलगाड़ी में खाली सीट देखकर यात्री सो जाते हैं यहां वैसी ही स्थिति बनी हुई थी। धीरे धीरे तापमान घट रहा था, मुझे भी अधिक नीचे देखने की लालसा नहीं थी क्योंकि बार बार वहीं जंगल, कभी रूई

रमेश गोयल

शिक्षा : कला, वाणिज्य व विधि स्नातक

जन्म : सिरसा 23.10.1948

व्यवसाय : आयकर, ट्रस्ट, सोसायटीज, ट्रेडमार्क व जीएसटी सलाहकार (अधिवक्ता)।

व्यावसायिक : 1970/1973 से बिक्रीकर/आयकर सलाहकार के रूप में व्यवसाय। आयकर अपीलीय अधिकरण चण्डीगढ़ व देहली तथा बिक्रीकर न्यायाधिकरण, हरियाणा व पंजाब के समक्ष अपील प्रतिनिधित्व। आल इंडिया फैडेरेशन आफ टैक्स प्रेक्टीशनरज, मुम्बई के आजीवन सदस्य। नैशनल बार एसोसिएशन आफ इंडिया के जिलाध्यक्ष। आयकर बार एसोसिएशन सिरसा के 1981 में संस्थापक, कई बार सचिव व कई बार प्रधान रहे।

सामाजिक : 1. अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक संस्था भारत विकास परिषद् में राष्ट्रीय मन्त्री पर्यावरण 2015-16 तथा 2006-07 से 2016-17 केन्द्रीय टीम में रहे। प्रान्तीय अध्यक्ष व उपाध्यक्ष रहे तथा सिरसा शाखा के संस्थापक अध्यक्ष (1997) हैं। 2. उल्लेखनीय -पर्यावरण व जलसंरक्षण को 2008 से एक मिशन के रूप में लिया हुआ है। पौधारोपण व वृक्ष बचाने, जल ऊर्जा संरक्षण, प्रदूषण रोकथाम व स्वच्छता के निमित्त राष्ट्रीय संस्था "पर्यावरण प्रेरणा" (2007) के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। 3. ह.प्रा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 1983 से प्रान्तीय उपाध्यक्ष। 4 वर्ष प्रान्तीय संयुक्त मंत्री। शाखा प्रधान, सचिव व कोषाध्यक्ष भी रहे। 5. अग्रोहा मैडिकल कालिज के आजीवन सदस्य हैं व 3 वर्ष कार्यकारिणी सदस्य रहे। 5. हरियाणा तरुण संघ के उपप्रधान व प्रधान रहे।1968-69 में नगर में नेताजी सुभाष बोस की प्रतिमा लगाने में अहम भूमिका।

प्रकाशन : 1. 'बिन पानी सब सून' (6000 प्रतियां प्रकाशित) राज्यपाल हरियाणा द्वारा विमोचन (2010)। 2. 'जल चालीसा' मुख्यमन्त्री, हरियाणा द्वारा विमोचन। (2012 से अब तक 45000 प्रतियां प्रकाशित)

साहित्यिक : कविता, लेख, लघुकथा आदि रचनाएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित है।

सम्पर्क : 20,आर.एस.डी.कालोनी, सिरसा (हरियाणा) मो.-9416049757

ईमेल: rameshgoyalsrs@gmail.com

www.facebook.com/ramesh.goyal.52

Web: www.savewatersavelife.com

ISBN-978-93-82197-97-3

सुकीर्ति प्रकाशन करनाल रोड, कैथल-136027 (हरियाणा) 01746-235862

email : sukirtiparkashan@gmail.com M.91-9215897365

आ० 12
378

गुवाहाटी (असम) की यात्रा

— रमेश गोयल
राष्ट्रीय पर्यावरण संयोजक,
भारत विकास परिषद्

भारत विकास परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारी मंडल की 2–3 फरवरी 2013 को निश्चित वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए गवाहाटी (असम) जाना था। मैं व मेरी धर्मपत्नी कमला गोयल 29 जून को सुबह लगभग 8 बजे किसान एक्सप्रेस से दिल्ली के लिए रवाना हुए और दिल्ली शालीमारबाग स्थित अपनी बेटी ममता व दामाद के पास आ गए। मेरी पत्नी को बेटी के पास दिल्ली छोड़ दिया। 30 जनवरी दोपहर 2 बजे दिल्ली डिब्रुगढ़ राजधानी एक्सप्रेस से हमारी यात्रा आरम्भ हुई जिसमें फतेहबाद से केवल कृष्ण अरोड़ा, रतिया से नरेन्द्र शर्मा, भूना से जिया लाल बांसल, (जो हरियाणा पश्चिम प्रान्त के क्रमशः अध्यक्ष, महासचिव व कोषाध्यक्ष हैं) नरवाना से क्षेत्रीय मन्त्री डा० वासुदेव बांसल तथा सूरतगढ़ राजस्थान से क्षेत्रीय मन्त्री श्री घनश्याम शर्मा मेरे साथ थे। जम्मू से श्रीमती सन्तोष गुप्ता व जम्मू कश्मीर प्रान्त के अध्यक्ष व महासचिव भी हमारे डिब्बे में थे। अगले दिन प्रातः रोहतक के श्री चन्द्रसेन जैन व हिसार के श्री सुरेन्द्र लाहोरिया इसी गाड़ी में हमें मिले जो सपत्नीक गवाहाटी जा रहे थे। हम सब ने महसूस किया कि हमें भी अपने अपने जीवन साथी के साथ यात्रा का आनन्द उठाना चाहिए था। अतः भविष्य में ऐसी लम्बी दूरी की यात्रा अपने अपने जीवन साथी के साथ सुनिश्चित करने का निर्णय किया।

इतनी लम्बी दूरी की यह मेरी दूसरी रेल यात्रा थी। इससे पूर्व प्रथम बार मैं 1989 में बेलारी (कर्नाटक) गया था जब श्रीमती सुषमा स्वराज ने लोकसभा का चुनाव उस संसदीय क्षेत्र से लड़ा था। लम्बे अन्तराल के कारण मुझे यह पहली ही लम्बी दूरी की रेल यात्रा लग रही थी विशेषकर इसलिए भी कि पिछले एक वर्ष में कमर व रीढ़ के दर्द के कारण परेशान रहा और पूर्ण रूपेण अभी भी ठीक नहीं था। गाड़ी रवानगी के कुछ समय बाद ही हमें पानी की बोतल व भोजन मिल गया जिसमें दाल, सब्जी, सलाद, चपाती, चावल, दही, अचार तथा स्वीट डिश के रूप में आईसक्रीम थी। हमारी सीटें एक ही केबिन में नहीं थी परन्तु हमने सम्बन्धित यात्रियों से तालमेल करके एक ही केबिन में 41 से 46 नम्बर पर अपना स्थान बना लिया था। संयोगवश हमारे सामने की सीट 47–48 पर दो भारतीय सैनिक यात्रा कर रहे थे, जो मूलतः हरियाणा प्रान्त के निवासी थे जिनमें एक हवलदार कप्तान सिंह जींद जिले के गांव चुहरपुर (अब चांदपुर) का निवासी था। कप्तानसिंह के ज्ञान को देखकर हम सब चकित थे। राजनीतिक, भौगोलिक, आर्थिक, ऐतिहासिक या वर्तमान स्थिति यानी जिस विषय पर भी चर्चा चलती वह उसमें पूर्ण जानकारी व आंकड़ों सहित भागीदारी करता था। पूछने पर पता चला कि फौज में रहते हुए उसने न केवल एम.ए., बी.एड की डिग्रियां प्राप्त की हैं बल्कि हरियाणा सिविल सर्विस की परीक्षा भी दे चुका है और मात्र 6 अंक से रह गया था। उनके कुछ और साथी, जो इसी गाड़ी में थे, बीच बीच में वहीं आ जाते थे।

दक्षीण यात्रा रामेश्वरम् धाम

2001 में इलाहाबाद कुंभ, 2004 में नेपाल यात्रा तथा 2010 में स्विटजरलैंड भ्रमण व कथा आदि के बाद सितम्बर 2013 में श्री भागवत कथा आयोजन समिति, अबोहर (पंजाब)के तत्वावधान में मुझे रामेश्वरम् धाम में कथा आयोजन में सम्मिलित होने का सुअवसर मिला। श्री गंगानगर से अपने रिश्तेदारों के माध्यम से कार्यक्रम की जानकारी मिली कि एक सितम्बर से चेन्नई होते हुए कन्या कुमारी तक 4–5 दिन का भ्रमण व 6 सितम्बर से 12 सितम्बर तक रामेश्वरम् में कथा तथा 13 सितम्बर को हवन यज्ञ आदि है। मैंने भी अपनी पत्नी सहित अपनी सीट बुक करा दी। किसी बड़े समूह के साथ इस प्रकार के भ्रमण का यह मेरा तीसरा अवसर था। प्रथम नेपाल, दूसरा स्विटजरलैंड फ्रांस व तीसरा यह कार्यक्रम था। मेरा अपना उद्देश्य कथा श्रवण से अधिक भ्रमण तथा अपने जल बचत व पर्यावरण अभियान को प्रचारित करना रहता है।

हम 30/8/2013 को कार से दिल्ली गए और अपनी पुत्री ममता के पास रहे। दिल्ली से चेन्नई के लिए 31 अगस्त दोपहर 3.30 पर दोरंतो एक्सप्रेस से 2 टायर ए.सी बुकिंग थी। इस गाड़ी से समूह के सैंकड़ो लोग थे। हमारा बेटा मनीष व पुत्रवधु शिखा पौत्र सहित हमें छोड़ने गए थे। मेरे पास 31 अगस्त सुबह का समय खाली था। भारत विकास परिषद् शालीमार दिल्ली की शाखा के अध्यक्ष श्री कुलदीप शर्मा से एक दो दिन फोन करके किसी विद्यालय में जल बचत सन्देश की व्यवस्था के लिए निवेदन किया। उन्होने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शालीमार बाग में व्यवस्था की और मुझे लेने आ गए। यह विद्यालय मेरी बेटी के घर के बिलकुल पास ही था वहां 20–25 मिनट तक लगभग 1000 विद्यार्थीयों को पर्यावरण व जल संरक्षण सन्देश के बाद शर्मा जी मुझे डिस्ट्रिक्ट पार्क ले गए। जहां 100–150 बर्जुग लोग योग द्वारा चलाये जा रहे दैनिक योग कार्यक्रम में आए हुए थे। शर्मा जी ने उनसे परिचय कराते हुए उन सभी महिला पुरूषों को भी सम्बोधित कराया। सभी ने समर्थन करते हुए जल बर्बादी न करने और रोकने में सहायता करने का संकल्प शर्माजी के माध्यम से किया।

हम समय से स्टेशन पंहुचे परन्तु दिल्ली से मद्रास दुरेन्तो एक्सप्रेस 12270 जो राजधानी एक्सप्रेस से भी श्रेष्ठ गाड़ी है, शाम 5.10 पर रवाना हुई। स्टेशन पर सिरसा, श्रीगंगानगर, ऐलनाबाद से अनेक परिचित थे। कथा समूह में कई ऐसे लोगों से मिले जिनके जाने की पहले से हमें कोई जानकारी नही थी। गाड़ी में खाने पीने की पूरी व्यवस्था थी। रात्रि भोजन के बाद विश्राम किया। अगले दिन एक सितम्बर प्रातः नाश्ते के बाद मैंने 'जल विद्युत बचत अभियान' विज्ञप्तियां गाड़ी के सह यात्रियों को बांटना आरम्भ किया जिसमें मेरी पत्नी ने पूरा सहयोग किया। मैं लगभग 1000 विज्ञप्तियां व 600 चालीसा अपने साथ लेकर आया था। विज्ञप्तियां बांटते हुए कई ऐसे परिचित मिले जिनसे वर्षो बाद भेंट हुई थी। विभिन्न स्थानों के अपरिचित लोगों ने मेरे इस अभियान व प्रयास की प्रशंसा की। कुछ सीमित लोगों को जल चालीसा भी भेंट की। गाड़ी में दक्षीण के कुछ ऐसे यात्री भी थे जिन्होने हिन्दी न जानने के कारण चालीसा लेने से मना कर दिया कुछ शिक्षित यात्री जो तामिल व अंग्रजी जानते थे, उन्होने विषय को

उज्जैन यात्रा:

2013 में भागवत कथा समिति अबोहर के कथा कार्यक्रम से दक्षीण की यात्रा की थी और रामेश्वरम् में एक सप्ताह रह कर विभिन्न स्थानों का दशर्न किया था जिसके यात्रा वर्णन में विस्तृत जानकारी लिखी है। श्रीमद् भागवत कथा समिति अबोहर (पजाब)के तत्वावधान में वर्ष 2014 में उज्जैन (म.प्र.) में भागवत कथा का आयोजन अगस्त के अन्तिम सप्ताह में निश्चित किया गया था और मैने अपनी पत्नी सहित इस कार्यक्रम में भागीदारी की ।

26 अगस्त 2014 को किसान एक्सप्रैस द्वारा सिरसा से दिल्ली गए और रात्रि का इन्दौर इन्टरसीटी रेल से उज्जैन के लिए रवाना हुए। हमने अपना व्यवसायिक कार्यालय लगभग एक वर्ष पूर्व देहली में भी स्थापित कर लिया था और अपना अस्थाई निवास स्थान भी सिरसा से देहली स्थानांतरित कर लिया था परन्तु मैं किसी कार्य से सिरसा में ही था, इसलिए 26/8/14 को सिरसा से दिल्ली आया था। हम रात्रि को गाड़ी में मूलतः सोते हुए गए और सुबह 10.25 पर उज्जैन पहुंचे। प्रातः उठने के बाद फ्रेश होने के अतिरिक्त शेव मैं अक्सर गाड़ी में ही बना लेता हूं और उस दिन भी ऐसा ही किया। उज्जैन के रास्ते कोटा जकंशन आता है जहा गाड़ी 20 मिनट के लिए रूकती है। स्टेशन पर फीकी चाय अपने व अपनी पत्नी (जो मधुमेह से पीड़ित है) के लिए लाया तथा नाश्ता किया।

कोटा राजस्थान प्रान्त का 25वां सबसे बड़ा जिला है जो राजधानी जयपुर से 240 कि.मी. दक्षीण की ओर स्थित है। यह भारत का 47वां सर्वाधिक जनसंख्या वाला शहर है तथा भारत के शैक्षिक शहर (एजुकेशन सीटी आफ इंड़िया) के नाम से विख्यात है। राजपूति सभ्यता से जुड़ा कोटा शहर की आबादी 2014 में लगभग 1140,000 थी। कोटा जिला ही नहीं मंडल भी है और यहां कमीशनर कार्यालय है। कैंसर हस्पताल व मैडिकल कालिज सहित अनेक ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ हस्पताल यहा पर स्थित हैं जिनमें भारत विकास परिषद् का हस्पताल भी सम्मिलित हैं भारत विकास परिषद् का सदस्य होने के नाते मुझे इस पर गर्व है और परिषद् के स्थाई प्रकल्पों की चर्चा में कोटा के इस हस्पताल का विशेष नाम रहता है और इस लिए कोटा आने पर एक सहज सा अपनात्व लगा जबकि मैं पहले कभी कोटा नहीं गया था। जुलाई 2015 में परिषद् की बैठक कोटा में निश्चित है और सम्भवतः यह बैठक परिषद् हस्पताल के ही किसी स्थान पर होगी।

कोटा का स्टोन पूरे उत्तर भारत में ही नहीं देश भर में भी काफी प्रसिद्ध है। मसूरिया मलमल भी कोटा का एक प्रसिद्ध कपड़ा है। राष्ट्र स्तरीय कोचिंग सैन्टर में कोटा का नाम देश विदेश में विख्यात है। यहां आकाश, बांसल, कैरियर प्वांईट सहित अनेक बड़े संस्थान हैं जहां देश भर से हर वर्ष लाखों विद्यार्थी कोचिंग के लिए आते हैं। पांच विश्व विद्यालय, मैडिकल कालिज, दंत कालिज, 15 सामान्य महाविद्यालयों के अतिरिक्त अनेक एम.बी.ए. संस्थान हैं। कोटा का सरकारी कालिज राजस्थान के सभी सरकारी कालिजों में सबसे बड़ा है।

वाराणसी :

श्री भागवत कथा समिति, अबोहर (पंजाब) के तत्वावधान में आयोजित वार्षिक भागवत कथा इस बार नेपाल में प्रस्तावित थी परन्तु लगातार दो बार आए भूकम्प के कारण वहां हुए विनाश के फल स्वरूप कथा स्थल वाराणसी में निश्चित किया गया। 14 सितम्बर 2015 शाम को शिव गंगा एक्सप्रैस से दिल्ली से चलकर 15 सितम्बर प्रातः वाराणसी पहुंचे। मेरे साथ मेरी धर्मपत्नी के अतिरिक्त सिरसा से गीता, यशोदा व लीना भी थी। हमारी व्यवस्था होटल डिवाईन में थी जबकि उसके लिए कथा स्थल भवन में स्थान आरक्षित था। कथा स्थल मारवाड़ी सेवा संघ में था और भोजन व्यवस्था पास ही स्थित छोटा नागपुर वाटिका में। यह क्षेत्र असी नहर के घाट का क्षेत्र है वृन्दावन से युवा कथा वाचक श्री गोपेश जी कथा व्यास के रूप में पधारे जिनकी अल्पायु (23 वर्ष) में ही 278वीं कथा बताई गई है। वाराणसी धर्म नगरी के साथ साथ शिक्षा, संगीत साहित्य,उद्योग आदि में भी विशेष स्थान रखती है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त इस क्षेत्र का महत्व 2014 में और भी बढ गया जब यहां से सांसद बनकर नरेन्द्र मोदी देश के प्रधान मन्त्री बन गए। इस प्रकार राजनैतिक रूप में भी काशी अग्रणी हो गई।

वाराणसी उतर प्रदेश में गंगा तट पर इलाहाबाद से 120 कि0मी0 तथा प्रान्तीय राजधानी लखनऊ से दक्षीण पूर्व में 320 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। वाराणसी बनारस व काशी के नाम से भी विख्यात है और विश्व के पुरातन एवं प्राचीनतम बसे हुए नगरों में से एक है। भारत की अध्यातम राजधानी, सात प्रमुख पवित्र स्थानों में सर्वश्रेष्ठ है। हिन्दुत्व और जैन के साथ साथ बुद्धमत के लिए भी महत्वपूर्ण है। बुद्धमत का प्रमुख स्थल सारनाथ यहां से केवल 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है वहीं गोध, गया, जहां महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था के समीप है और यहां आने वाले पर्यटक व अन्य लोग इन स्थानों पर भी समान्यतया जाते हैं। देहली से वाया आगरा कानपुर होते हुए कलकता जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 2 पर स्थित वाराणसी में रेलवे जंकशन है और लाल बहादुर शास्त्री अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अडडा भी है। इलाहाबाद, चित्रकुट व आयोध्या जाने के लिए यहां तक हवाई यात्रा करनी पड़ती है तथा आगे रेल या सड़क मार्ग द्वारा आना जाना पड़ता है।

वाराणसी हजारों वर्ष उत्तर भारत का प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। गंगा तट पर स्थित व धार्मिक आस्था का प्रतीक होने के कारण सदैव तीर्थ यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है और इसी कारण विश्व में बसे न केवल हिन्दु यहां आते हैं बल्कि भारत आने वाले पर्यटकों के लिए भी यह महत्वपूर्ण है। नदी किनारे 365 घाट हैं जिनके अलग अलग नाम व महत्व है। पत्थरों से बनी चौडी व बड़ी सीढ़ियों से गंगा स्नान के लिए नीचे उतरने का साधन है। दश अश्वमेध घाट सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह न केवल काशी विश्वनाथ मन्दिर के साथ स्थित हैं बल्कि प्रतिदिन इसी घाट पर सांय कालिन गंगा आरती होती है। गंगा आरती की भव्यता निहारने प्रतिदिन घाट पर तथा सामने गंगा में नावों पर हजारों लोग उपस्थित रहते हैं। मर्णिकर्निका घाट पंचगंगा घाट हरिशचन्द्र घाट प्रमुख हैं जहां हिन्दु अपने प्रियजनों की मृत्यु पर अन्तिम संस्कार करते हैं। गंगा के पूर्वी किनारे पर 18वीं शताब्दी में मुगल शैली में बना राम नगर किला है जिसमें घुमावदार बालकोनी, खुले चौक व दर्शक दीर्घा बनी है।

लगभग 23000 मन्दिरों के इस शहर में भगवान शिव का काशीनाथ मन्दिर सर्वाधिक महत्वपूर्ण है संकट मोचन हनुमन मन्दिर व दुर्गा का भी विशेष महत्व है। काशी नरेश (वाराणसी के महाराज) वाराणसी के मुख्य संरक्षक हैं और हर धार्मिक उत्सव में उनकी भागीदारी अनिवार्य है। शिक्षा और संगीत के प्रमुख केन्द्र वाराणसी ने राष्ट्र को अनेक दर्शनिक कवि लेखक, चिन्तक, संगीतकार व महान विभूतियां प्रदान की हैं। एशिया का सर्वाधिक बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय भी यहा पर स्थित है। 1920 में हिन्दी का प्रथम राष्ट्रीय समाचार पत्र अज यहीं से प्रकाशित हुआ था। वाराणसी का महत्व उस समय और भी बढ़ गया जब आदि

नाथद्वारा:

गत वर्षो की भांति श्री भागवत कथा समिति अबोहर के तत्वावधान में श्री भागवत कथा का आयोजन इस बार नाथद्वारा (राजस्थान) में हुआ। 31 अगस्त 2016 को चेतक एक्सप्रैस से पत्नी सहित एक सितम्बर को प्रातः 7.30 बजे मावली जंक्शन पहुंचे जहां से कैब–जीप द्वारा नाथद्वारा गए। नाथद्वारा में दामोदर धाम के सूट नः 203 में स्थान मिला जिसमें सुन्दर व्यवस्था थी।
नाथद्वारा राजस्थान के राजसमन्द जिला में स्थित है जहां पुष्ठि मार्गीय वैष्णव सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है। यहां नन्दन श्री नाथ जी का भव्य मन्दिर है जहां करोड़ों श्रद्धालु प्रतिदिन आते हैं । मावली रेल जक्शन के निकट यह स्थान हैं जो राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित बस अडडा से मात्र एक किलोमीटर की दूरी पर है। नाथ जी का मन्दिर लगभग 337 वर्ष पुराना है तथा वृन्दावन व द्वारका जी की प्रतिमा अनुरूप ही भगवान श्री कृष्ण जी की प्रतिमा स्थापित है। झीलों की नगरी उदयपुर से उत्तर की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 8 पर स्थित है। राजसमन्द जिला मुख्यालय से मात्र 17 किलोमीटर है। नाथ द्वारा के लोगों का स्वतन्त्रता संग्राम में भी योगदान रहा है और अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार जिनमें श्री हरि राय महाप्रभु, दामोदर जी शास्त्री, कृष्ण चन्द शास्त्री प्रो० नारायण दास बागोरा सहित अनेक हस्ताक्षर हैं। ज्योतिष में भी बागोरा, पालीवाल वंश के लोग अग्रणी रहे हैं। विद्यालयों की बहुलता के साथ साथ यहां महाविद्यालय होने के कारण शिक्षा में पिछड़ा क्षेत्र नहीं है।

2 सितम्बर प्रातः9 बजे (भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा) को मुख्य मन्दिर के बाहरी प्रांगण कथा स्थल श्री बल्लभ भवन से शोभा यात्रा चली जो 12 बजे कथा स्थल पहुंची। वहां से हम दामोदर धाम विश्राम के लिए आ गए। दामोदर धाम के सामने ही राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय स्थित था। एक बजे मुख्यधापिका से जल संरक्षण सन्देश हेतु मिला और उन्हाने सहर्ष विद्यार्थीयों को विद्यालय प्रांगण में एकत्रित करके मुझे उन्हे सम्बोधित करने का अवसर प्रदान किया। लगभग 300 विधार्थी थे। एक फलैक्स व कुछ जल चालिसा विद्यालय के लिए भेंट किये ।

दामोदर धाम व कथा स्थल के पास ही सनाढ्य समाज हवेली में भोजन व्यवस्था थी। भोजनपरांत कुछ देर विश्राम किया और चार बजे कथा स्थल बल्लभ भवन गए जहां आयोध्यावासी आर्चाय रामानुजाचार्य राघवाचार्य जी के द्वारा कथा व्यास के रूप में कथा आरम्भ की गई। अबोहर के मूल निवासी व अब भीलवाड़ा निवासी श्री नरेन्द्र कुमार गोयल मुख्य यजमान थे। महाराज श्री ने मोह के त्याग व भगवान का ध्यान करने के लिए बताया कि अपनी सन्तान व पुत्र–पोत्र को भगवान का ही समझे अपना नहीं और मोह कम करके अपना ध्यान भगवत भजन, आराधना, स्तुति में लगाएं शाम को आरती के बाद कथा विश्राम हुआ। भोजन उपरांत अपने स्थल पर आकर रात्रि विश्राम किया।

3/09/2016 प्रातः तैयार होकर चौपाटी नाथद्वारा स्थित राजकीय बालिका उच्च विद्यालय पहुंचा और प्रार्थना के बाद विद्याथियों का पर्यावरण एवं जल ऊर्जा संरक्षण का सन्देश दिया। 600 छात्र छात्राओं के इस विद्यालय में अति कच्छावा मुख्य अध्यापिका ने स्वागत किया व मंजू जैन ने आभार व्यक्ति किया। पुस्तकालय हेतु 10 जल चालिसा भेंट की। सनाढय समाल हवेली में नाश्ते के बाद बड़ा बाजार नाथद्वारा स्थित श्री गोवर्धन राजकीय माध्यमिक विद्यालय गया और विधार्थीयों को सम्बोधित किया। प्रिन्सीपल साधना जी ने अभिनन्दन व आभार व्यक्त किया। यह विद्यालय कथा स्थल के पास ही स्थित था और वहां से 10.30 बजे कथा स्थल पर आ गया जहां महाराज श्री भगवान के अवतारों की चर्चा कर रहे थे। उन्होन कहा कि पांडव कौरवों से कम अपराधी नहीं थे जिन्होने द्रोपदी को जुए में दाव पर लगाया था और उसे बचा भी नहीं पाए। पांडवों ने द्रोणाचार्य को धोखे से मारा था। द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम अश्वथामा था और कौरवों की सेना में अश्वथामा नाम का एक हाथी भी था। अश्वथामा हाथी के मारे जाने पर युधिष्ठर से कहलवाया गया कि अश्वथामा हतो और उाने नरो न कुजरो बोला उससे पूर्व ही ढोल नगाड़े बजा दिए जिस पर पुत्र

पृष्ठ 936 97 [illegible]

प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग सम्मेलन

— रमेश गोयल, सिरसा

पतंजली योगपीठ हरिद्वार के तत्वावधान में 2 जनवरी 2011 से 5 जनवरी 2011 तक प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग सम्मेलन का आयोजन किया गया। सिरसा में श्री चन्द्रपाल योगी की अध्यक्षता में गीता भवन में बैठक में मैं श्री सतीश शर्मा व गांव के श्री.... कुल तीन लोग इसमें सम्मिलित होने के लिए तैयार हूए। एक जनवरी 2011 को शाम को अपनी कार से डबवाली गए जहां से रेलगाड़ी द्वारा हरिद्वार के लिए रवाना हुए और 2 जनवरी 2011 को प्रातः वहां पहुंच कर आटो रिक्शा द्वारा कनखल योगपीठ आश्रम गए। वहां ठहरने की सुन्दर व्यवस्था थी। मुझे कमर में कुछ परेशानी के कारण नीचे का कमरा दिया और वे दोनों साथी प्रथम मंजिल पर ठहरे। कमरों में आवश्यक सभी सुविधाएं थी।

स्नान आदि से निवृत होकर विभिन्न स्थानों से आए हुए सभी लोगों ने पास ही बने भोजनालय में नाश्ता किया। दलिया दुध आदि शुद्ध भारतीय परम्परा अनुसार व्यवस्था थी। दोपहर के भोजन उपरांत 4 बजे विशेष रूप से सजाए गए हाल में कार्यक्रम की व्यवस्था थी।

First International Yog Conference प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग महासम्मेलन yog for health & social Transformation के उद्देश्य से आयोजित महासम्मेलन के उद्घाटन सत्र में स्वामी रामदेव जी के साथ स्वामी चिदानन्द जी स्वामी वेद भारती जी ,डा0 एच.आर.नगेन्द्र, बैंगलुरू से डा0 डी.के. आयंगर(पदम विभूषण) आर्चाय बाल कृष्ण, आचार्य बृजानन्द, ओ पी तिवाड़ी, हावर्ड विश्वविद्यालय से श्री.... व अन्य अनेक गणमान्य लोग मंचासीन थे। सम्मान–अभिनन्दन औपचारिकताओं के बाद आर्चाय बृजानन्द जी ने कहा कि योग ही जीवन है। योग विहिन जीवन पशु से भी निम्नस्तर है। योग से स्वस्थय शरीर रहने के साथ मन शान्त व एकाग्र रहता है। जिनके पास स्वस्थ्य शरीर व प्रसन्न मन है उसी पर भगवत कृपा मानी जाती है। उन्होने कहा कि जीवन की दो बड़ी आवश्यकता परम वैभव व परम शान्ति योग से ही सम्भव है। यद्यपि यह दोनों विपरीत छोर हैं परन्तु योग से यह सम्भव है।

आचार्य बाल कृष्ण ने बताया कि 1996 में खुले में योग कक्षाएं आरम्भ की गई थी। कृपालु जी महाराज द्वारा इस भवन का शुभारम्भ किया गया था। जन सहयोग व प्यार से एक भवन तैयार हुआ। उसके बाद दिव्य फार्मेसी की स्थापना की गई। अनेक मशीने लगाई गई तथा योगपीठ की अन्य जानकारियां दी। उन्होने कहा कि सभी शरीर से स्वास्थ्य हों, मन से स्वास्थ्य हो तथा चरित्र से महान बने।

आयगंर जी जैसे 93 वर्षीय युवा थे (2018) में उनका निधन हो गया) ने कहा कि योग केवल श्रृषियों मुनियों द्वारा किया जाता था। रामदेव योग को जनजन तक पहुंचाने की पहल की है। वास्तव में स्वामी रामदेव योग के भीष्म पितामह हैं उन्होने कहा कि श्री कृष्णाचारी, जो मेरे गुरू थे, जीजा भी थे, ने मुझे योग द्वारा स्वस्थ्य किया। मैं 14 वर्ष बिस्तर पर रहा था और योग द्वारा स्वस्थ्य हुआ। मुझे प्रेरणा हुई कि मैं अन्य लोगों को योग सिखाऊ। गुरू ने मुझे केवल आसन सिखाए शेष मैंने प्रयास कर सीखा योग कला से सम्मान मिलने लगा। 1930 के दशक में स्कूलों में योग सिखाता तो विरोध होने लगा। मैंने भी संकल्प कर लिया और 1934 में विद्यार्थीयों को सीखाने लगा। परन्तु विद्यार्थी कम आते थे। 1950 में मशहुर वायलन वादक जो वायलन नहीं बजा पा रहे थे। तीन दिन के योग से ही यह सम्भव हो गया। नेहरू जी (तत्कालीन प्रधान मन्त्री) को पता चला तो सम्मान मिला। 1952 में स्विटजरलैंड आमन्त्रित किया गया परन्तु आर्थिक स्थिति कमजोर थी। 5 बच्चे थे। दुध ब्रेड से गुजारा करते थे। मैं योग को आन्दोलन बनाना चाहता था परन्तु न कर सका। स्वामी रामदेव इसे जन जन आन्दोलन बनाने में सफल हुए। हम पैसे लेकर योग सीखाते हैं जबकि रामदेव ने इसे साधना व शोध का रास्ता बनाया।

पांवटा साहब वाया नाहन

..... रमेश गोयल

भारत विकास परिषद् के उत्तर क्षेत्रीय प्रोढ़ साधना शिविर, जो पांवटा साहब– हिमाचल पूर्व प्रान्त के सौजन्य से 2–3 मार्च 2019 को प्रस्तावित था, में भागीदारी के लिए एक मार्च प्रातः मैं रमेश गोयल, सर्वश्री कस्तुरी लाल छाबड़ा, रमेश जींदगर, सुशील गुप्ता व मदन गोयल सहित हम पांच साथी प्रातः 7 बजे सिरसा से इनोवा गाडी नम्बर 6626 से सतपाल चालक के साथ नाहन के लिए रवाना हुए। कैथल मोड़ पर नाश्ते के बाद आगे बढ़े और दोपहर लगभग 1 बजे नाहन पहुंचे जहां रमेश जींदगर के घनिष्ट मित्र सुरेन्द्र गर्ग की दुकान पर चाय पानी पी कर त्रिलोकपुर स्थित महामाया बाला सुन्दरी मन्दिर के लिए रवाना हुए। हिमाचल के सिरमौर जिला स्थित त्रिलोकपुर में महामाया बाला सुन्दरी का मन्दिर नाहन के दक्षीण–पश्चिम पर स्थित है। बाला सुन्दरी के भारत में अनेक स्थानों पर मन्दिर हैं जिनमें हरियाणा के यमुनानगर व उत्तर प्रदेश में देवबन्द आदि प्रमुख हैं। इस क्षेत्र में 3 शक्ति मन्दिर होने के कारण क्षेत्र का नाम त्रिलोकपुर पड़ा। तीनों शक्ति पीठ मां दुर्गा के विभिन्न रूपों के लिए जाने जाते हैं। त्रिलोकपुर का मुख्य मन्दिर भगवती त्रिपुर बाला सुन्दरी, जो मां दुर्गा के बाल्यकाल को दर्शाता है। दूसरा भगवती ललिता देवी, जो बाला सुन्दरी मन्दिर से 3 कि.मी. और तीसरा त्रिपुर भैरवी है जो बाला सुन्दरी मन्दिर से उत्तर पश्चिम में 13 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

महामाया बाला सुन्दरी के मन्दिर में कुछ सीढ़ियां चढ़कर हम ऊपर गए और अन्दर दरबार में जाकर सभी ने शीश नवाया। मुख्य द्वार पर "ऊं कली" चामुन्डाये विच्चे" लिखा हुआ है जिससे स्पष्ट है कि यह चामुन्डा देवी का बाल रूप है। मन्दिर के प्रांगण में सुन्दर पत्थर लगे हैं और सफाई व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा गया था। बाहर अनेक दुकानें प्रसाद, पूजा सामग्री व अन्य सामान के लिए बनी हुई हैं। धूप व वर्षा से श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए दूर तक ऊपर शेड बना हुआ है। मन्दिर के पुजारी को मैंने "जल चालीसा" की प्रति भेंट की। मन्दिर के दूसरी ओर ध्यानु भगत का मन्दिर व संग्रहालय बना हुआ है। वर्ष भर में लगभग 32 लाख श्रद्धालु यहां आते हैं। नवरात्रों में यहां विषेश मेला होता है। यहां आने वाले श्रद्धालु ध्यानु भगत मन्दिर में जाकर अपनी यात्रा सम्पन्न मानते हैं ।

2.20 पर हम वहां से रेणुका जी मन्दिर के लिए रवाना हुए जो वहां से लगभग 45 कि.मी. है। रेणुका जी मन्दिर के साथ ही भगवान परशुराम का मन्दिर भी बना हुआ है और उसके पास ही एक सुन्दर रमनीक झील है। यह मन्दिर भगवान परशुराम की माता रेणुका देवी के नाम पर है। किवदन्ती है कि बलशाली राजा सहस्त्र ने रेणुका का अपहरण करना चाहा था और तब वे इस झील में कुद कर छुप गई थी इसीलिए इस झील को रेणुका झील के नाम से पवित्र माना जाता है। एक किवदन्ती यह भी है कि अपने पिता ज्यादग्नि के आदेश पर परशुराम ने अपनी माता का बलिदान कर दिया था – शीश काट दिया था। इसके लिए रामलीलाओं के मंच पर भगवान राम–परशुराम संवाद में परशुराम अपने लिए कहते हैं "जो पिता के ऋण से उऋण हुआ जो माता का बलिदाता है।" इसलिए इस किवदन्ती में अधिक सार्थकता लगती है। रेणुका झील को माता रेणुका का अवतार माना जाता है। हिमाचल प्रदेश की यह सबसे बड़ी झील है जो मन्दिर की भव्यता व शान्ति को चार चांद लगाती है। यहां नवम्बर मास में भव्य रेणुका मेला लगता है जिसमें दूर दूर से लाखों श्रद्धालु आते है। यह नाहन से 35 कि.मी. व चण्डीगढ से 95 कि.मी. दूरी पर स्थित है। झील के साथ अनेक आश्रम व मठ बने हुए हैं जहां यात्रियों के ठहरने की भी व्यवस्था है।